डॉ·सरदार मुजावर
एम्·ए·पीएच्·डी·
हिन्दी विभाग,
किसन वीर महाविद्यालय, वाई,
जि·सातारा

प्र मा ण प त्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि, सुश्री नलिनी जाधव ने मेरे निर्देशन में यह लघु-शोध-प्रबंध एम्·फिल्·(हिन्दी) उपाधि के लिए तैयार किया है। पूर्व योजना के अनुसार यह कार्य सम्पन्न हुआ है। उनकी यह मौलिक रचना है।

वाई
दिनांक : 11.6.96

(डॉ· सरदार मुजावर)
शोध-निर्देशक

अ नु शं सा

हम अनुशंसा करते हैं कि कु· नलिनी जयसिंगराव जाधव का एम्·फिल्· (हिन्दी) का लघु-शोध-प्रबंध "हिन्दी ग़ज़ल के विकास में दुष्यन्तकुमार का योगदान" परीक्षणार्थ प्रस्तुत किया जाए।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध कला विधा शाखा (Faculty of Arts) तथा आधुनिक हिन्दी काव्य के अन्तर्गत समाविष्ट है।

पुरुषोत्तम शेठ प्राचार्य, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा (महाराष्ट्र) प्राचार्य लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा	L. B. S. COLLEGE SATARA	डॉ· गजानन सुर्वे रीडर एवं अध्यक्ष, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा (महाराष्ट्र)

स्थल : सातारा
दिनांक : 30-5-1996

परीक्षार्थ अग्रेषित

शिवाजी विश्वविद्यालय
हिन्दी विभाग
कोल्हापुर

अध्यक्ष
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर – ४१६ ००४

हिन्दी ग़ज़ल के विकास में दुष्यन्तकुमार का योगदान

प्र स्था प न

यह लघु-शोध-प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम्.फिल्.(हिन्दी) की उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थल : सातारा
दिनांक : 11/6/96

कु. नलिनी जयसिंगराव जाधव
शोध-छात्रा के हस्ताक्षर

भूमिका

दरअसल आज भी ग़ज़ल विधा की सही जानकारी साधारण मनुष्य को नहीं है। मैं भी एक साधारण मनुष्य की तरह हूँ। ग़ज़ल नाम सुनते ही मेरे मन में आशंका उत्पन्न हुई और एक रोमानी दृश्य मेरे सामने आया और मेरा मन उत्तेजित हुआ, यह जानने के लिए कि ग़ज़ल क्या है ? किसे ग़ज़ल कहते है ? और इसके लिए मैं तत्पर हुई और इस विषय के संदर्भ में मुझे डॉ·सरदार मुजावरजी का बड़ा सहयोग मिला है। प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध इस दिशा में किया हुआ मेरा एक सफल प्रयास है।

हिन्दी ग़ज़ल साहित्य में आजतक अनेक ग़ज़लकारों ने अपना हाथ आजमाया है। लेकिन इसमें सबसे महत्वपूर्ण भूमिका स्व·दुष्यन्तकुमार त्यागी ने निभायी है। हिन्दी ग़ज़ल साहित्य में उनका महान ग़ज़लकार के रूप में नाम लेना ही उनके साथ न्याय करना होगा।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध को प्रथम अध्याय में दुष्यन्तजी का जीवन परिचय दिया है। वे किस हालात से गुजर कर एक महान हस्ती बन गये इसका चित्रण किया है। तथा उनकी महान कृतियों का भी सामान्य परिचय प्रस्तुत किया है।

दूसरे अध्याय में हिन्दी ग़ज़ल साहित्य का स्वरूप तथा महत्वपूर्ण प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला है।

तीसरे अध्याय में हिन्दी ग़ज़ल साहित्य के ऐतिहासिक विकास की ओर नज़र डाली है। जिन परिस्थितियों से हिन्दी ग़ज़ल गुजरी इसका सही ब्यौरा दिया है।

चौथे अध्याय में हिन्दी ग़ज़ल साहित्य में दुष्यन्तकुमार ने किस प्रकार योगदान दिया इसका चित्रण किया है।

पाँचवे अध्याय में सारतत्व तथा महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ, निष्कर्ष के तौर पर निकाली गई हैं।

कु. नलिनी जयसिंगराव जाधव

शोध-छात्रा

ऋणनिर्देश

मैं अपने शोध-निर्देशक डॉ·सरदार मुजावरजी की हृदय से आभारी हूँ। दुष्यन्तकुमार की ग़ज़लों का अध्ययन करने का साहस आपने मुझमें जगाया। आपकी सहायता के कारण ही इस दिशा की ओर मेरा कदम बढ़ा। आपके अनमोल सहयोग के कारण ही आज मैं यह लघु-शोध-प्रबंध "हिन्दी ग़ज़ल के विकास में दुष्यन्तकुमार का योगदान" पूरा कर पायी हूँ।

प्राचार्य ई·जी·निकम, स·गा·म·कॉलेज कराड तथा प्रो·एम्·एस·मुजावर महिला महाविद्यालय, उंब्रज आप मेरे प्रेरणादायक रहे हैं। आपकी मैं अत्यन्त आभारी हूँ तथा डॉ·गजानन सुर्वे, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा, डॉ·निकम, शिवाजी कॉलेज सातारा तथा डॉ·पी·एस·पाटील, हिन्दी विभाग प्रमुख, शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर आप सभी लोगों ने समय-समय पर मेरी सहायता की है। आपकी भी मैं हृदय से आभारी हूँ।

मेरे पिताजी श्री·जयसिंगराव जाधवजी की मैं दिल से आभारी हूँ। आपके सहयोग के बिना यह कार्य संभव ही नहीं था। मेरी पूज्य माताजी सुनिताजी की मैं हृदय से आभारी हूँ, आपने समय-समय पर इस काम में मेरी हिम्मत बढ़ाने का कार्य किया है।

मेरे प्यारे जिजाजी श्री·डी·वाघमाने, श्री·ए·आर·थोरात, श्री·आर·एच·पिसाल तथा मामाजी का मैं शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ। तथा मेरी प्यारी बहने राजश्री आशा, सुजाता तथा दादी की भी मैं दिल से आभारी हूँ। मेरे प्यारे भाई दिलीपकुमार तथा अन्य छोटे-बड़ों की मैं दिल से आभारी हूँ।

अन्त में मैं शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ मेरे प्यारे दादाजी स्व·मारुतीराव जाधवजी का जिनके दिए हुए ज्ञान की राह पर चलने की शायद यह मेरी कोशिश रही है। और सबसे अंत में इस लघु-शोध-प्रबन्ध को आपके सामने प्रस्तुत करते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है।

इस लघु-शोध-प्रबंध का अत्यन्त तत्परता से टंकन-लेखन करने वाले "रिलैक्स सायक्लोस्टाईल, सातारा" के श्री·मुकुन्द ढवले तथा उनके सहयोगी श्री·सुशीलकुमार कांबले, राजू कुलकर्णी के प्रति मैं आभारी हूँ।

स्थल : सातारा

दिनांक : 11.6.96

कु·नलिनी जयसिंगराव जाधव

शोध-छात्रा